

100th Birth Anniversary of Mukesh

Mukesh Chand Mathur, revered as one of the most iconic playback singers in the history of Indian cinema, etched a lasting legacy through his mellifluous voice and profound emotional expression. Born on July 22, 1923, in Delhi, Mukesh's journey from modest beginnings to musical greatness is a tale of talent, perseverance, and enduring impact.

Mukesh's early life was marked by humble circumstances, where he initially worked as a peon in the Central Public Works Department. During this time, fate intervened, and the renowned actor Motilal discovered his exceptional vocal ability. Recognizing Mukesh's potential, Motilal encouraged him to pursue a career in playback singing, thus setting the stage for his remarkable ascent in the world of music.

Arriving in Bombay (now Mumbai) in the 1940s, Mukesh embarked on his professional singing career, honing his craft with unwavering determination. His debut in playback singing quickly garnered attention, as his voice possessed a unique blend of depth, clarity, and emotive power that resonated deeply with listeners. Collaborations with eminent composers like Naushad, Anil Biswas, and Ghulam Haider further showcased Mukesh's versatility and ability to interpret diverse musical styles with finesse.

Mukesh's breakthrough came with the film "Pehli Nazar" (1945), where his rendition of the song "Dil Jalta Hai To Jalne De" captivated audiences and established him as a formidable presence in the realm of Hindi film music. Throughout the 1940s and 1950s, Mukesh continued to deliver a string of memorable hits, including the hauntingly poignant "Awara Hoon" from the film "Awara" (1951) and the soul-stirring "Jeena Yahan Marna Yahan" from "Mera Naam Joker" (1970), which showcased his ability to convey deep emotions through his singing.

One of Mukesh's defining qualities was his ability to evoke a range of emotions—from joy and romance to melancholy and introspection—through his vocal performances. His voice became synonymous with the golden era of Bollywood music, resonating with audiences across India and beyond. Songs like "Mera Joota Hai Japani" from "Shree 420" (1955) and "Main Pal Do Pal Ka Shayar Hoon" from "Kabhi Kabhie" (1976) exemplify his mastery in capturing the essence of each lyric and melody, elevating them to the status of timeless classics.

Beyond Hindi cinema, Mukesh's influence extended to regional languages, where he lent his enchanting voice to songs in Gujarati, Marathi, Bengali, Rajasthani, Punjabi, and even Sanskrit. His ability to transcend linguistic barriers endeared him to audiences across

India, solidifying his reputation as a pan-Indian icon of musical excellence. In recognition of his exceptional contributions to Indian music, Mukesh received numerous accolades during his career. He was honored with several Filmfare Awards for Best Playback Singer, including posthumous recognition for his poignant rendition in "Kabhi Kabhie". Additionally, Mukesh was bestowed with the prestigious National Film Award for Best Male Playback Singer for his soulful rendition of "Kai Baar Yun Bhi Dekha Hai" from the film "Rajnigandha" (1974), underscoring his versatility and enduring appeal.

Despite his towering success in the world of music, Mukesh remained grounded and committed to philanthropic causes. He actively participated in social initiatives and was a devoted member of Rotary International, using his talent to entertain and uplift communities during times of national crisis.

Tragically, Mukesh's life was cut short on August 27, 1976, when he passed away suddenly during a concert tour in the United States. His untimely demise left a profound void in the hearts of music lovers worldwide, marking a somber moment in Indian music history. Yet, Mukesh's legacy endures through his timeless melodies, which continue to captivate new generations and evoke deep emotional resonance.

Mukesh Chand Mathur's journey from a humble beginning to becoming an iconic figure in Indian playback singing exemplifies the transformative power of music. His ability to touch hearts and convey profound emotions through his soulful voice remains unparalleled, making him a timeless beacon of artistic excellence. Mukesh's contributions to Hindi cinema and Indian music as a whole are not just a chapter in history but a testament to the enduring impact of his talent and dedication. As long as there are melodies that stir the soul and songs that resonate with emotion, Mukesh's voice will echo through the corridors of time, reminding us of the enduring power of music to transcend boundaries and enrich human experience.

Department of Posts is delighted to release a commemorative postage stamp on Voice of Indian Music Mukesh. With his emotive voice and unforgettable songs, Mukesh's contribution to music has left an enduring legacy that inspires generations. This commemoration not only celebrates his remarkable talent but also ensures that his influence on Indian music is remembered and cherished for years to come.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Sh. Sankha Samanta

Cancellation Cachet

Text : Based on information received from Ministry of Culture



भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



मुकेश की 100 वीं जयंती
100th BIRTH ANNIVERSARY
OF MUKESH

विवरणिका BROCHURE

मुकेश की 100वीं जयंती

भारतीय सिनेमा के इतिहास के सुप्रतिष्ठित पार्श्व गायकों में से एक मुकेश चंद माथुर ने अपनी मधुर आवाज और भावुक कर देने वाले अंदाज के जरिए अमित छाप छोड़ी है। 22 जुलाई, 1923 को दिल्ली के एक साधारण परिवार में जन्मे मुकेश द्वारा संगीत के क्षेत्र में अपने लिए इतना बड़ा मुकाम हासिल करने तक की यात्रा प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और धैर्य की मिसाल है।

मुकेश का प्रारंभिक जीवन बहुत ही साधारण परिस्थितियों में बीता। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत केंद्रीय लोक निर्माण विभाग में चपरासी के रूप में की। इसी दौरान, उनके भाग्य ने करवट ली और उनकी भेंट उस समय के सुप्रसिद्ध अभिनेता मोतीलाल से हुई। मोतीलाल ने मुकेश की असाधारण गायन प्रतिभा को पहचाना और उन्हें पार्श्व गायन के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, संगीत की दुनिया में मुकेश के शानदार सफर की शुरुआत हुई।

1940 के दशक में मुकेश बॉम्बे (अब मुंबई) आ गए और यहां पार्श्व गायक के रूप में अपने करियर की शुरुआत कर वे निरंतर अपनी कला को निखारते रहे। मुकेश की आवाज में गहराई और स्पष्टता के साथ-साथ ऐसी भावनात्मक शक्ति थी कि पार्श्व गायन के क्षेत्र में करियर की शुरुआत से ही उन्होंने लोगों का मन मोह लिया और सफलता के सोपान चढ़ने लगे। नौशाद, अनिल बिस्वास और गुलाम हैदर जैसे प्रख्यात संगीतकारों के साथ मुकेश की जुगलबंदी ने उनकी बहुमुखी प्रतिभा और विभिन्न प्रकार की संगीत शैलियों को कुशलता से निभा सकने की क्षमता को और भी अधिक निखारा।

मुकेश को बड़ी सफलता फिल्म “पहली नजर” (1945) से मिली, जिसमें उनके द्वारा गाए गए गीत “दिल जलता है तो जलने दे” ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस गीत के माध्यम से मुकेश ने हिंदी फिल्म संगीत के क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। 1940 और 1950 के दशक में, मुकेश ने कई यादगार गीत गाए, जिनमें फिल्म “आवारा” (1951) का दिल को छू लेने वाला गीत “आवारा हूँ” और “मेरा नाम जोकर” (1970) का “जीना यहाँ मरना यहाँ” शामिल है। इन गीतों में, गायन के माध्यम से गहनतम संवेदनाओं को सहजता से व्यक्त कर देने की मुकेश की क्षमता बखूबी परिलक्षित हुई। ये गीत, गायन के माध्यम से भावनाओं को सहज बयां करने की उनकी क्षमता का प्रमाण भी हैं।

मुकेश की मुख्य विशेषता यह थी कि वे अपने गीतों के जरिए श्रोताओं के मन में खुशी और प्रेम से लेकर उदासी और आत्मविश्लेषण जैसी अनेक प्रकार की भावनाएं जागृत करने में सक्षम थे। इसी वजह से देश-विदेश के श्रोताओं के बीच लोकप्रिय रही मुकेश की आवाज बॉलीवुड संगीत के सुनहरे दौर का पर्याय बन गई। इसके अलावा, “श्री 420” (1955) का गीत “मेरा जूता है जापानी” और “कभी कभी” (1976) का गीत “मैं पल दो पल का शायर हूँ” ऐसे कालातीत क्लासिक्स हैं जो हर प्रकार के बोल और धुन पर आसानी से पकड़ बना सकने के उनके कौशल का अनुपम उदाहरण हैं।

हिंदी सिनेमा के साथ-साथ, मुकेश ने क्षेत्रीय भाषाओं में भी अपनी आवाज का जादू बिखेरा। उन्होंने गुजराती, मराठी, बंगाली, राजस्थानी, पंजाबी और यहाँ तक कि संस्कृत में भी कई गीत गाए। भाषाई बंधनों को तोड़कर विभिन्न भाषाओं में कौशलपूर्ण गायन की उनकी क्षमता ने उन्हें पूरे भारत में श्रोताओं का चहेता बना दिया, जिससे पूरे भारत में उत्कृष्ट गायक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा और अधिक मजबूत हुई। भारतीय संगीत में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें उनके करियर के दौरान विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायन के लिए फिल्मफेयर

पुरस्कार तथा फिल्म, “कभी कभी” में उनके मर्मस्पर्शी गायन के लिए मरणोपरांत दिया गया पुरस्कार भी शामिल है। इसके अलावा, मुकेश को फिल्म “रजनीगंधा” (1974) के “कई बार मैं भी देखा है” के भावपूर्ण गायन के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरुष पार्श्व गायक श्रेणी के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार उनकी बहुमुखी प्रतिभा और चिरस्थायी अपील को रेखांकित करते हैं।

संगीत की दुनिया में अपार सफलता प्राप्त करने के बावजूद मुकेश सदैव जमीन से जुड़े रहे और परोपकार के प्रति समर्पित रहे। मुकेश विभिन्न सामाजिक कार्यों में भी पूरी सक्रियता से भागीदारी करते थे। वे रोटरी इंटरनेशनल के समर्पित सदस्य रहे। राष्ट्रीय संकट के समय में मुकेश ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से देश के नागरिकों का मनोरंजन कर उनका मनोबल बनाए रखा।

दुर्भाग्यवश, 27 अगस्त, 1976 को संयुक्त राज्य अमेरिका में एक संगीत दूर के दौरान मुकेश का असमय निधन हो गया। इस घटना ने दुनिया भर के संगीत प्रेमियों के दिलों में कभी न भर पाने वाला खालीपन छोड़ दिया। भारतीय संगीत के इतिहास में यह एक दुःखद क्षण था। तथापि, मुकेश की विरासत उनके कालातीत गीतों के माध्यम से आज भी जीवित है। ये गीत आज भी नई पीढ़ियों को आकर्षित कर उनके दिलों में गहरे जज्बात उत्पन्न करते हैं।

एक साधारण पृष्ठभूमि से भारतीय पार्श्व गायन के क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्ती बनने तक का मुकेश चंद माथुर का सफर, संगीत की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुपम उदाहरण है। अपनी भावपूर्ण आवाज के जरिए दिलों को छू लेने और गहरी भावनाओं को व्यक्त कर सकने की मुकेश की क्षमता अद्वितीय थी। उनकी यही क्षमता कलात्मक उत्कृष्टता के स्थायी प्रतीक के रूप में उनकी पहचान स्थापित करती है। हिंदी सिनेमा और भारतीय संगीत में मुकेश का योगदान इतिहास का एक अध्याय मात्र नहीं, बल्कि उनकी प्रतिभा और समर्पण के स्थायी प्रभाव का प्रमाण है। जब तक दिलों को छू लेने वाली धुनें और भावनाओं के ज्वार उत्पन्न करने वाले गीत सुने जाते रहेंगे, समय के गलियारों में मुकेश की आवाज ऐसे ही गूंजती रहेगी और हमें याद दिलाती रहेगी कि संगीत, सभी प्रकार के बंधनों से परे है और यह समस्त मानवता को समृद्ध करने वाला अनुभव है।

डाक विभाग, भारतीय संगीत की आवाज, ‘मुकेश’ पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक-टिकट न केवल उनकी विलक्षण प्रतिभा को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि भारतीय संगीत के क्षेत्र में उनका प्रभाव आने वाले कई वर्षों तक याद रखा जाएगा और संजोया जाएगा। अपनी भावपूर्ण आवाज और अविस्मरणीय गीतों से मुकेश ने संगीत के क्षेत्र में एक ऐसी चिरस्थायी विरासत छोड़ी है जो आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

डाक विभाग, भारतीय संगीत की आवाज, ‘मुकेश’ पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक-टिकट न केवल उनकी विलक्षण प्रतिभा को रेखांकित करता है, बल्कि भारतीय संगीत के क्षेत्र में उनके प्रभाव को वर्षों तक याद रखने और संजोने का माध्यम भी है। अपनी भावपूर्ण आवाज और अविस्मरणीय गीतों से मुकेश ने संगीत के क्षेत्र में एक ऐसी चिरस्थायी विरासत छोड़ी है, जो आने वाली कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

आभार :

डाक-टिकट/एफडीसी/

विवरणिका/विरूपण कैंसे

पाठ

: श्री शंख सामंत

: संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त जानकारी पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य : 3000 पैसे

Denomination : 3000 p

मुद्रित मिनिचेयर शीट : 111000

Miniature Sheets Printed : 111000

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट

Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

Printer : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00